वर्ष 28, अंक 04 अप्रैल-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

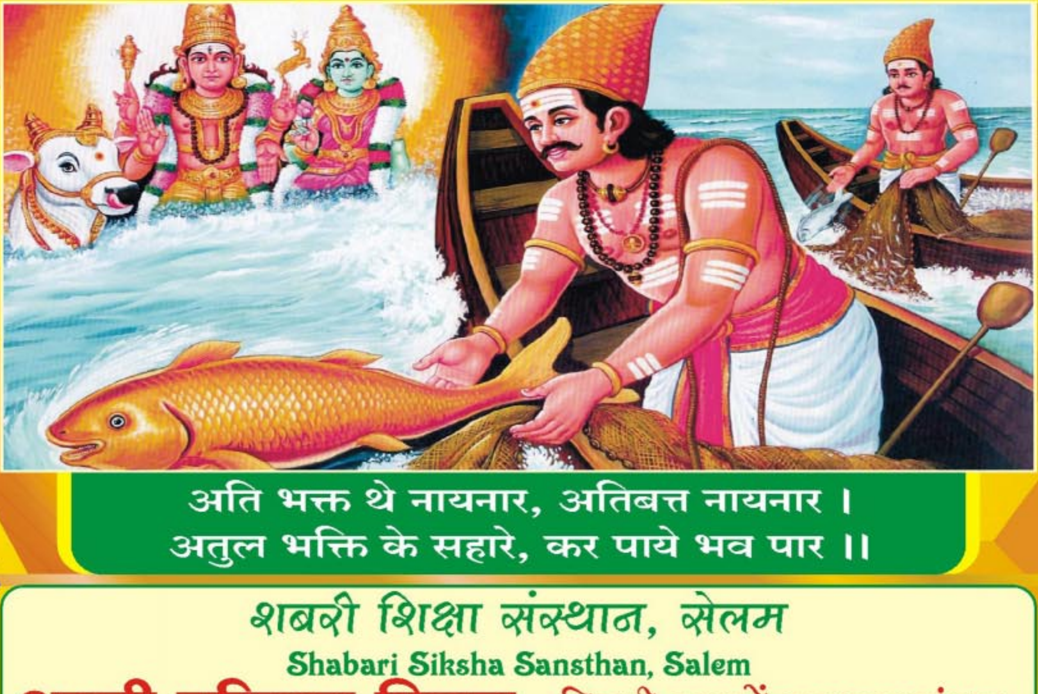

अति भक्त थे नायनार, अतिबत्त नायनार ।
अतुल भक्ति के सहारे, कर पाये भव पार ।।

शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम

Shabari Siksha Sansthan, Salem

शबरी परिवार मिलन हिन्दी हृदयों का महासंगम

तमिलनाडु के सेलम से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी सरकारी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, हिन्दीतर भाषी क्षेत्र की यह एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है ।

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 04 | मूल्य ₹ 3/- | अप्रैल - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414
0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
क्या करे ? 7
शबरी परिवार मिलन 2026........ 8
சபரி பரிவார் மிலன் 2026 10
प्यारी चिरैया अब 12
शबरी परिवार 12
अच्छा होता है... 13
गरज 14
वह फरियादी...................... 16
सफलता 17
तिनकों का महल–एक मौन प्रेरणा 18
दरबार 20
पीकर के विषपान 21
माँ 22
आह्वान 23
मनहरण घनाक्षरी छन्द............ 23
सम्मान........................... 24
क्या मिलता है मुफ्त में ?........ 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
गहराई 30
कुछ करो जग जननी दुर्गा महारानी 31
दो कविताएँ....................... 32
पैरानॉइड 33
दिल अपनों की तलाश में हैं 34
भार.............................. 34
लड़लड़ कर मर रहे हैं 35
मन बनजारा 35
पत्थर पर नदी का इतिहास....... 36
मन मेरा डोले भोले 36
नारी–नारायणी 37
घर 37
फागुन की बारिश 38
श्रावण की ठुमरी और शहतुत 38
हाइकू की तरह 39
आश्रय का सपना 39
कर्मनिष्ठ का जीवन सुखमय 40
चित्र 40
श्री हनुमान जन्मोत्सव की बधाई . 41
शिमल–समुद्र 41
वनज्वाला......................... 42
पाठकों के पत्र 43
नवांकुर 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

युद्ध के मेघ आज दुनिया को घेर रखे हैं। अमरीका और इस्रैल दोनों मिलकर इरान पर बम बरसा रहे हैं। इरान भी उसका बदला ले रहा है। अमरीका का कहना है कि इरान के अणुबम बना पाना मानवता के लिए खतरा है। कभी भी उन बमों से अमरीका पर हमला हो सकता है। लाखों करोडों लोग मारे जाने की संभावना है। इरान के पास अणुबम का होना उनके लिए बडी खतरनाक बात है। इसलिए इरान को रोकने तथा उसके पास जो मूल वस्तु है उसे हडपने के लिए इरान पर निरंतर बम की वर्षा की जा रही है। इस्रैल की तो बात ही बडी अनोखी है। युद्ध कला में वह सर्वमान्य सिद्ध होने के प्रयास में है।

तीनों प्रांतों की आम जनता इनकी रण नीति और बम से दुखी है। बहुत सारे लोगों की मृत्यु हो चुकी है। बहुत सारे घायल हैं। जनता की सारी संपत्ति खतरे में है। कुछ नेता मार गिराये गये हैं तो कुछ और की जान खतरे में है। युद्ध से इन तीनों प्रांतों की जनता मात्र नहीं दुनिया भर के लोग पीडित है। जलते तेल के कुएँ पूरी दुनिया में यातायात को चौपट बना रहे हैं। कई राज्यों में पेट्रोल का दाम आसमान छू रहा है। भारत में स्थिति काफी बेहतर है। कुछ स्वार्थी इस युद्ध का नाम लेकर धन लूटना चाहते हैं।

कारण कुछ भी क्यों न हो ? इन राज्यों को सोचना चाहिए कि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान कभी बन नहीं सकता। बिगाडना या नष्ट करना बहुत आसान है। लेकिन बनाना या निर्माण करना अत्यंत कठिन बात है। बढती दुनिया में प्रगति और प्यार मात्र को स्थान देना चाहिए। इसी में मानव जाति की ही नहीं बल्कि समस्त जीव जंतुओं का सुख निर्भर है। किसी राज्य पर अधिकार कर लेने से या किसी राज्य से कुछ लूट लेने से कभी कोई बडा नहीं बन सकता। कोई सुखी नहीं ठहर सकता। सबके साथ सबका विकास मात्र ही दुनिया में सुख भर सकता है। सबको यह विचार अपनाना चाहिए।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

प्यार का रोग

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – मेरे प्यार या काम रूपी इस रोग को मैं कितना भी छुपाना चाहूँ यह तो पानी के स्रोत के समान बढता ही जा रहा है ।

प्यार रूपी इस रोग को मैं छुपा नहीं पाती हूँ । इस रोग का कारण याने मेरे प्रेमी को इस बारे में कुछ बता भी नहीं पाती हूँ ।

उनके वियोग को सहे बिना मेरी जान को अपनानेवाला यह तन एक ओर उनके प्यार तथा दूसरी ओर उसे प्रकट न करनेदेनेवाली लज्जा से कावड के समान बन गया है ।

प्यार और उससे उत्पन्न काम भावना सागर-सा छा गया है । लेकिन उसे पार करने योग्य नाव नहीं है ।

सुख देनेवाली इस दोस्ती में इतना दुख देनेवाले मेरे प्रेमी अगर वैरी बन जावें तो क्या क्या करेगा ?

प्यार और उससे उत्पन्न काम भावना जब सुख देता है तब सागर के समान ठहरता है । लेकिन जब दुखदायक बनता है तब सागर से भी बडा बन जाता है ।

प्यार तथा उससे उत्पन्न काम भावना से मैं किसी के बिना अकेला पड गयी हूँ । इस सागर को पार नहीं कर पा रही हूँ । आधी रात को भी सोये बिना अकेली पडी रहती हूँ ।

यह रात भी दुखी है । सबको सुलाकर भी खुद सो नहीं पा रही है । अब मेरे सिवा इसे साथ देनेवाला कोई नहीं है ।

ये रातें बहुत लंबी ठहरती हैं । यह दुख तो प्रेमी-प्रेमिका के अलग हो जाने पर होनेवाला दुख से भी अति भयंकर है ।

मेरे प्रेमी के यहाँ अगर मेरे मन के समान जा पाती तो उनको देखने के लिए तडपनेवाली इन आँखों को आँसू के बाढ में तैरने नहीं पडते ।

क्या करे ?

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

रथ नहीं है तो चलेगा कोई बात नहीं
पथ ही नहीं है तो बता क्या कर सकते
कपड़े ऊँचे रकम के नहीं चाहिए चलेगा वह तो
नंगा घूमने की वह जिंदगी कभी नहीं चाहिए
बात करनेवाले ही कोई नहीं रहे तो चलेगा
बात करने की क्षमता ही नहीं रहे तो क्या करें ?
राज्य में सब कुछ सबको मिल जावे तो सही
रात गई तो बात गई कहनेवाले राजनीतिज्ञ रहे तो क्या करें ?

जाति मुक्त देश हो सब जनता यहाँ एक हो
धर्म को निभाने वाले हर व्यक्ति का नाम मानव हो
कुछ मत कहना सब कुछ हो अपना
स्वार्थी बनकर लूटते जाएँ तो बता क्या करें ?
शिक्षक शब्द में शिक्षा सहित नीति धर्म भरें
संस्कृति आई और सभ्यता का पाठ सब में भरें
नित्य नए ज्ञान का भंडार बच्चों के सामने खोलें
देश हित को त्याग कर बात अपनी बढ़ने दें तो क्या करें ?

उन्नति सबकी वही उन्नति माने सब तो बढ़िया है
उन्नति अपनी मात्र को लक्ष्य बनावे तो क्या करें
परिवार की बड़ोती चाहिए वह तो हर एक को
समाज और देश की उन्नति के लिए बता अब क्या करें ?
मानव हो कभी दानव मत बनो सब कुछ मत अपना
दान किया करो भलाई सबकी अपनाया करो
सुख में सबका हक है दुख दूर करो तुम दृढ़ बनो
सबके साथ सबके विकास उसी का तुम अब से काम करो ।

शबरी परिवार मिलन 2026

शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम से हिन्दी प्रचारकों तथा हिन्दी सेवियों का सम्मान करने के उद्देश्य से चलाया जाने वाला शबरी परिवार मिलन का आयोजन 29.03.2026 को तमिलनाडु के पोल्लाच्वी शहर में किया गया। होसुर, सेलम, चेन्नै, मदुरै और तिरुच्चिरापल्ली के बाद छठा शबरी परिवार मिलन पोल्लाच्वी के सुप्रसिद्ध महाविद्यालय श्री त्यागराज महाविद्यालय में संपन्न हुआ।

परिवार मिलन को एक पर्व के समान मनाने के लिए पोल्लाच्वी, तिरुपुर, पल्लडम, कोयंबत्तूर, ईरोड, सेलम, राशिपुरम आदि शहरों के अलावा... धर्मपुरी, चेन्नै, तूत्तुकुडी, सात्तूर, पेरुंदुरै, तंजावुर, पांडिचेरी, तिरुवारूर, कुंबकोणम, विरुदुनगर आदि शहरों से भी संपूर्ण उत्साह के साथ 150 हिन्दी प्रचारक हिन्दी प्रेमी तथा हिन्दी सेवी पधारे हुए थे।

परिवार मिलन का प्रथम सत्र में हिन्दी और नारी पर लेखिका, भाषा विद तथा मीडिया पर्सन डॉक्टर राधिका अपने विचारों तथा विशिष्ट उदाहरणों से नारी और हिन्दी दोनों का सम्मान बढ़ाया। भारत में जहाँ नारी पूजी जाती है वहाँ हमारी प्यारी भाषा हिन्दी का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। सत्र में सुश्री लक्षिता ने सुमधुर हिन्दी के जरिए सबका दिल जीत लिया। श्रीमती सुचित्रा ने मधुर तमिल में नारी की महिमा का चित्रण किया। इसी सत्र में विभिन्न हिन्दी प्रेमियों को अपना विचार व्यक्त करने का सुंदर अवसर प्रदान किया गया था। प्रथम सत्र के तुरंत बाद चाय-पान की व्यवस्था की गई थी।

द्वितीय सत्र में बहु भाषा विद, शिव भक्त डॉक्टर एन. चंद्रशेखर ने हिन्दी में बोलने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। हिन्दी सीखनेवालों तथा बच्चों में हिन्दी के प्रति रुचि कैसे बनावे ? डेढ़ घंटे में हिन्दी में बातचीत करने की क्षमता उनमें कैसे ला सकते हैं आदि पर उन्होंने रुचिकर वर्णन प्रदान किया। इसके बाद शबरी शिक्षा संस्थान के प्रधान सचिव आर.जे. संतोष कुमार जेमि ने शबरी शिक्षा संस्थान की हिन्दी सेवा का विस्तार वर्णन प्रदान किया।

प्रकाशन विभाग से प्रकाशित सारी पुस्तकों पर नजर डालने के साथ-साथ शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका से जुड़ने तथा अपनी और अपने छात्रों की प्रतिभा बढ़ाने का सुझाव सब हिन्दी प्रेमियों के सामने रखा । इसके बाद मध्यान्ह भोजन करने तथा मन की बात एक दूसरे तक पहुँचाने का मौका दिया गया ।

तृतीय सत्र में हिन्दी हृदयों का सम्मान बड़े प्यार से किया गया । परिवार मिलन में भाग लेनेवाले हर हिन्दी हृदय को सादर मंच पर बुलाकर डॉ. आर. जयकरण और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा तिरुच्ची के कोषाध्यक्ष श्री. एस. नारायण के कर कमलों से प्रमाण पत्र के साथ शाल सहित सम्मान प्रदान किया गया । परिवार मिलन के हर सदस्य को ऐसा लगा कि उनकी हिन्दी सेवा का सही पहचान और आधार शबरी शिक्षा संस्थान से किया गया है । डॉ. आर. जयकरण ने अपने वक्तव्य में हिन्दी के प्रति शबरी शिक्षा संस्थान के लगन तथा प्रयासों पर प्रकाश डाला । श्री. एस. नारायणन ने हिन्दी सेवा का हौसला बढ़ाते हुए हिन्दी की महिमा के साथ हिन्दी सेवी के गुणों पर भी प्रकाश डाला ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में शबरी शिक्षा संस्थान की सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए संस्थापक श्री. एम. श्रीधर ने हिन्दी प्रेमियों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद अर्पित किया । अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री. एम. वेंकटेश्वरन ने सबसे हिन्दी की निरंतर सेवा करने की विनती की । परिवार मिलन के कार्यक्रम का संचालन संतोष कुमार से किया गया । श्री. विजय मुकेश ने धन्यवाद भाषण दिया और फिर राष्ट्रगान सहित सम्पूर्ण होकर शबरी परिवार मिलन सारे हिन्दी हृदयों में महत्वपूर्ण स्थान पाने लायक मिलन सिद्ध हुआ ।

शबरी परिवार मिलन

शबरी शिक्षा संस्थान हर हिन्दी प्रेमी को, हर हिन्दी सेवी को, हर हिन्दी प्रचारक को शबरी परिवार का अभिन्न अंग मानता है । शबरी परिवार मिलन हर हिन्दी हृदय का मिलन है ।

சபரி பரிவார் மிலன் 2026

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம் சார்பில் ஹிந்தி பிரச்சாரகர்கள் மற்றும் ஹிந்தி சேவகர்களை கௌரவிக்கும் நோக்கில் நடத்தப்படும் **சபரி பரிவார் மிலன்** நிகழ்ச்சி 29.03.2026 அன்று தமிழ்நாட்டின் பொள்ளாச்சி நகரில் நடைபெற்றது. ஓசூர், சேலம், சென்னை, மதுரை மற்றும் திருச்சிராப்பள்ளிக்குப் பிறகு ஆறாவது சபரி பரிவார் மிலன் பொள்ளாச்சியின் புகழ்பெற்ற கல்லூரியான ஸ்ரீ தியாகராஜ கல்லூரியில் நடைபெற்றது. பரிவார் மிலனை ஒரு பண்டிகையாகவே கொண்டாடுவதற்காக பொள்ளாச்சி, திருப்பூர், பல்லடம், கோயம்புத்தூர், ஈரோடு, சேலம், இராசிபுரம், தருமபுரி, சென்னை, தூத்துக்குடி, சாத்தூர், பெருந்துறை, தஞ்சாவூர், பாண்டிச்சேரி, திருவாரூர், கும்பகோணம், விருதுநகர் போன்ற நகரங்களில் இருந்து 150 ஹிந்தி பிரச்சாரகர்கள், ஹிந்தி ஆர்வலர்கள் மற்றும் ஹிந்தி சேவகர்கள் முழு உற்சாகத்துடன் பங்கேற்றனர்.

பரிவார் மிலனின் முதல் அமர்வில், ஹிந்தி மற்றும் பெண்கள் பற்றி எழுத்தாளர், மொழி வித்தகர் மற்றும் ஊடகவியலாளர் டாக்டர் ராதிகா தனது கருத்துக்கள் மற்றும் குறிப்பிட்ட எடுத்துக்காட்டுகள் மூலம் பெண்கள் மற்றும் ஹிந்தி இரண்டையும் பாராட்டினார். இந்தியாவில் பெண்கள் போற்றப்படும் தேசத்தில் நம் அன்பான மொழியான ஹிந்திக்கும் முக்கிய இடம் உண்டு. அமர்வில் செல்வி. லக்ஷிதா இனிமையான ஹிந்தி மூலம் அனைவரின் இதயத்தையும் வென்றார். திருமதி. சுசித்ரா அமுதத் தமிழில் பெண்களின் மகிமையை விவரித்தார். இந்த அமர்வில் பல்வேறு ஹிந்தி ஆசிரியர்களுக்கு தங்கள் கருத்துக்களை வெளிப்படுத்த வாய்ப்பு வழங்கப்பட்டது.

முதல் அமர்வுக்குப் பிறகு தேநீர் பரிமாறப்பட்டது.

இரண்டாவது அமர்வில், பன்மொழி வித்தகர், சிவ பக்தர் டாக்டர் என். சந்திரசேகரன் ஹிந்தியில் பேசுவதன் அவசியத்தை எடுத்துரைத்தார். ஹிந்தி கற்கும் மாணவர்கள் மற்றும் குழந்தைகளிடையே ஹிந்தி மொழி ஆர்வத்தை எவ்வாறு வளர்ப்பது ? ஒன்றரை மணி நேரத்தில் ஹிந்தியில் உரையாடும் திறனை அவர்களிடம் எவ்வாறு கொண்டு வருவது என்பது பற்றி அவர் சுவாரஸ்யமாக விவரித்தார்.

அதன்பிறகு, சபரி கல்வி நிறுவனத்தின் தலைமை செயலாளர் ஆர்.ஜே. சந்தோஷ் குமார் ‘ஜெமி’ சபரி நிறுவனத்தின் ஹிந்தி சேவையின் விரிவான விளக்கத்தை அளித்தார். புத்தக வெளியீட்டுத் துறையின் அனைத்து புத்தகங்களையும் அவற்றால் ஹிந்தி ஆசிரியர்களும் மாணவர்களும் பெறக்கூடிய பயன்களையும் விவரித்தார். சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிகையுடன் இணைந்து தங்கள் மற்றும் தங்கள் மாணவர்களின் திறமையை வளர்க்குமாறு அனைத்து ஹிந்தி ஆர்வலர்களுக்கும் அவர் பரிந்துரைத்தார். அதன்பிறகு, மதிய உணவு மற்றும் மனம் விட்டுப் பேசுவதற்கான வாய்ப்பு வழங்கப்பட்டது.

மூன்றாவது அமர்வில், ஹிந்தி ஆர்வலர்களுக்கு மரியாதை செலுத்தப்பட்டது. பரிவார் மிலனில் பங்கேற்ற ஒவ்வொரு ஹிந்தி ஆர்வலரையும் மேடையில் அழைத்து கல்வியாளர், முதல்வர் டாக்டர் ஆர். ஜெயகரன் மற்றும் தென்னிந்திய ஹிந்தி பிரச்சார சபை திருச்சியின் பொருளாளர் திரு. எஸ். நாராயணன் அவர்களும் கௌரவப்படுத்தினர். ஒவ்வொருவருக்கும் சான்றிதழும் பொன்னாடையும் வழங்கப்பட்டது.

பரிவார் மிலனில் பங்கேற்ற ஒவ்வொருவரும் தங்கள் ஹிந்தி சேவை சபரி நிறுவனத்தால் அங்கீகரிக்கப்பட்டதாக உணர்ந்தனர். டாக்டர் ஆர். ஜெயகரன் தனது உரையில் ஹிந்தி மொழிக்கு சபரி நிறுவனத்தின் அர்ப்பணிப்பு மற்றும் செயல்களை எடுத்துரைத்தார். திரு. எஸ். நாராயணன் ஹிந்தி சேவையை ஊக்குவித்து, ஹிந்தியின் மகிமை மற்றும் ஹிந்தி சேவகர்களின் குணங்களை விளக்கினார்.

முன்னதாக இந்நிறுவனத்தின் சேவைகளை எடுத்துரைத்த, நிறுவனர் திரு. எம். ஸ்ரீதர் ஹிந்தி ஆர்வலர்களுக்கு அவர்களின் மகத்தான பங்கேற்புக்கு நன்றி தெரிவித்தார். தனது தலைமை உரையில், திரு. எம். வெங்கடேஸ்வரன் அனைவரையும் ஹிந்தி சேவையில் இறுதி வரை ஈடுபடுமாறு வேண்டினார். பரிவார் மிலன் நிகழ்ச்சியை திரு. ஆர்.ஜெ. சந்தோஷ் குமார் தொகுத்தளித்தார். திரு. விஜயமுகேஷ் நன்றியுரை வழங்க, பின் தேசிய கீதத்துடன் நிகழ்ச்சி முடிவடைந்தது. சபரி பரிவார் மிலன் அனைத்து ஹிந்தி ஆர்வலர்களின் இதயத்தில் நீங்கா இடம் பெறும் ஒரு குடும்ப நிகழ்வாகமாறியது.

प्यारी चिरैया अब

– श्रीमति सुखमिला अग्रवाल 'भूमिजा',
मुंबई, महाराष्ट्र

किसी भी डाल पर देखी, नहीं प्यारी चिरैया अब ।
न जाने खो गयी किस भाग में प्यारी चिरैया अब ।।
नहीं सुनती सुबह से शाम तक मस्ती भरी चीं-चीं ।
नहीं क्यों फुदकती आकर, अरी प्यारी चिरैया अब ।।
कहाँ है घोंसला तेरा, कहाँ कुनबा छुपाई है ।
कहाँ घर-बार है तेरा, बता प्यारी चिरैया अब ।।
बड़ा सूना लगे आँगन, कहाँ वो मुग्ध चिंचाहट ।
तनिक मुंडेर भी आती, नहीं प्यारी चिरैया अब ।।
कभी तो लौट के आजा, लिवा ला दिन पुराने वो ।
सलौना मैं बना दूँ घोंसला प्यारी चिरैया अब ।।

शबरी परिवार

हिन्दी सेवी का है मधुर शबरी परिवार
हिन्दुस्तानी का अपना है यह शबरी परिवार

हिन्दी के प्रचार प्रसार में लगा है
हिन्दुस्तान की एकता लक्ष्य बना है

स्वार्थ का नाम कभी नहीं कहीं नहीं
परमार्थ काम कर रहा है शबरी परिवार

परमो धर्म बना है हिन्दी की सेवा
शबरी परिवार है हिन्दी प्रचारकों का अपना

आइए इस शबरी परिवार में हम मिलाते सबको
हिन्दी और हिन्दुस्तान से प्यार करनेवाले हर मित्र को ।

अच्छा होता है...

– श्री. मनीष उपाध्याय,
नेहू, शिलांग

अच्छा होता है मेरे लिए
मेरे उम्मीदों का रोज टूटना,
तुम्हारी लाख मिलनेवाली
डांटे, अवहेलना और अनदेखी करना,
मन मेरा हर रोज कांच की भांति
टूटता रहता है,
न जाने किस उम्मीद में मैं तुमसे
जुड़ा हुआ हूँ,
न जाने तुमसे मेरी कौन सी अभिलाषा है,
मैं अंततः तुममें बाल हृदय लेकर
प्रेम के लिए जुड़ा था,
वो बस एक मेरे लिए कोरी कल्पना बन कर रह गई,
मैं अकेला कितना खुश रहता था,
तुमसे न कभी कोई उम्मीद करता था,
करता था अपनी मनमर्जिया, लेता था हर क्षण का आनंद मौज से,
तुमने आकर सब कुछ मेरा नष्ट कर दिया,
हँसते हुए चेहरे पर पीलापन में
भर दिया,
कर दो मुझे आजाद, मैं फिर से
जीना चाहता हूँ,
लड़खड़ाते ही मगर अपने दम पर
चलना चाहता हूँ,
अपनी सुंदर–सी भावनाओं में अब खुद को भरना चाहता हूँ,
तुम जिसे सच मान कर बैठे हो
वक्त के साथ मै भी उसे झूठ करना चाहता हूँ ।

गरज

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

महाविद्यालय में सोमवार के दिन वर्ग चल रहा था । लड़के-लड़कियाँ बड़े ध्यान से अपने प्रोफेसर की बातें सुन रहे थे । प्रजित का चेहरा उदास लग रहा था । उसके दोनों खास दोस्त नवीन और प्रणव उसे बहुत देर से देख रहे थे । वर्ग के बीच में बोल भी नहीं सकते थे । बहुत देर तक उनको चुपचाप रहना पड़ा । सामने जो वर्ग चला रही थी वह उस विद्यालय के सबसे खडूस प्राध्यापिका थी । बात-बात में बरस पडना उसकी आदत थी । किसी भी विषय के प्रति रुचि तभी उत्पन्न होती है जब छात्रों का मन अध्यापक के प्रति प्यार या आदर पूर्ण भाव से भरे हो । विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करने में शिक्षक के आचरण का प्रभाव जरूर पड़ता है । कुछ शिक्षक छात्रों से मिलजुल कर उनकी हर बात को समझ कर उनके लिए वर्ग चलाते हैं तो कुछ और अपना कर्म निभाने के उद्देश्य से विषय की प्रस्तुति करके निकल जाते हैं । वर्ग की समाप्ति हो गई थी । छात्रों में चैन की साँस वापस आई ।

वर्ग के छूटते ही तीनों महाविद्यालय के कैंटीन की तरफ बढे । तीन कप चाय बोला गया । प्रजीत का चेहरा अब भी उदासी से भरा था । नवीन ने पूछा क्या हुआ तुझे आज सुबह से मुँह फुला कर बैठे हो ? किसी लड़की वड़की के चक्कर में हो क्या ? लड़की की बात सुनकर प्रणव की हँसी नहीं रुकी । चीरते हुए प्रजीत ने कहा... मेरे पापा मुझे हमेशा डाँटते रहते हैं । कुछ भी करो चिड़ते रहते हैं । हर चीज़ में गाली सुनकर जिंदगी जीने लायक नहीं रही है । पता नहीं है मैंने उनका क्या बिगाड़ा हमेशा मुझ पर चिल्लाते रहते हैं ।

नवीन ने कहा ''मेरे पिताजी भी कम नहीं है ।'' बातों से ही रही कभी खबर लातों से भी मुझे घायल कर देते हैं । प्रणव भी कहने लगा अरे हर घर में यही होता है । पिताजी होने का मतलब है डांटना और मारना । जन्म होते ही अपने पुत्र को बहुत प्यार देते हैं । अपने आप को बड़ा मर्द समझने लगते हैं । बेटा थोड़ा बड़ा हो जाए तो उसके हर कार्य में कुछ ना कुछ गलती निकालना उनका कार्य बन जाता है ।

उन तीनों की बात सुनते हुए उनकी सहेली मोनिका बोलने लगी... मेरे घर में ही नहीं किसी भी लड़की के घर में पिताजी कभी गुस्सा नहीं करते । अभी तो बड़े प्यार से पेश आते । लेकिन हाँ कभी-कभी माँ बहुत ही कठोर बन जाती और सजा

भी देने लगती । लेकिन ऐसा कभी नहीं कह सकते हैं कि गुस्सा करने से वे हमसे प्यार नहीं करते । एक और बात भी है कि हम लड़कियाँ आपके जैसे बात–बात पर मुँह नहीं दिखाते और उल्टा जवाब कभी नहीं देते । थोड़ा बड़े होने हो जाने पर आप लोग भी अपने आप को हीरो समझने लगते हैं । आपको ऐसा लगता है कि आप दुनिया के बादशाह हैं किसी को आपके कार्यकल्पों पर कुछ नहीं कहना चाहिए । प्रणव को ले लो वह अपनी प्रेमिका से कितनी बार लड लेता है । वह लड़की चाहे कुछ भी बोले, कितनी भी गाली दे वह हमेशा उसके पीछे पड़ा रहता है । पता है कॉलेज में उसका एक दूसरा नाम है प्लीज प्रणव । सुबह से रात तक वह अपनी प्रेमिका के पीछे प्लीज... प्लीज... करते घूमता है ।

अब तो ऐसा लगने लगा कि नवीन और प्रजीत को पुनर्जन्म मिला है । दोनों प्रणव को देखकर बड़े जोर से हँसने लगे । प्रणव का चेहरा लाल हो गया । एक मिनट के बाद वह कहने लगा... यह जो बात बोल रही है बहुत सही बोल रही है । एक प्रेमिका के लिए हम उसके सारे नखरे और गुस्से सहते हैं । उसके दूर चले जाने के डर से उसकी हर बात को मान भी लेते हैं । लेकिन जन्म देकर हमारे जीवन को सुखदम बनाने के उद्देश्य से शिक्षा तथा अन्य सुविधाएँ देनेवाले पिताजी के गुस्सा करने पर उनके खिलाफ हो जाते हैं ।

हमारी प्राध्यापिका जिसे आप बहुत सारे अन्य नामों से भी बुलाते हैं वास्तव में खडूस नहीं है । उनके विषय इतना गहरा है कि अगर वे हँसते हुए पाठ सिखाएँगे तो आप कभी समझ नहीं पाएँगे । उनके खडूस रहने के कारण ही हमारे विद्यालय के अनेक छात्र जाने–माने कंपनियों में उच्च पदों में काम कर रहे हैं । गुस्सा मानव की भावना है । गुस्सा किससे किया जाता है और किस पर किया जाता है इस पर विचार करना । कोई भी पिता अपने पिता होने के कारण सड़क पर जानेवाले किसी भी लड़के पर नहीं चिल्लाते । अपने बच्चों को एक अच्छे पद पर पाने के लिए और उनके सुखमय जीवन के लिए उन पर चिल्लाते हैं । जब तुम पिता बन जाओगे तभी तुम एक पिताजी की भावना को समझ सकते हो तब तक कभी नहीं ।

प्रणव और नवीन के साथ प्रजीत का भी चेहरा खिलने लगा । उनको यह बात समझ में आ गई थी बिना कोई कारण पिता कभी नहीं चिल्लाते । यह तो उनकी गरज है । आखिर पिता, पिता ही तो है । हँसते हुए सब लोग अगले वर्ग के लिए रवाना हुए ।

छोटी कहानी

वह फरियादी

– श्री. बद्री प्रसाद वर्मा अनजान,
गोरखपुर, उ.प्र.

एक गरीब फरियादी की जमीन को एक बड़े सेठ ने बिना बैनामा के उसके जमीन पर अपना कब्जा जमा लिया था ।

सेठ का कहना था यह जमीन मेरी है इसपर तेरा कोई अधिकार नहीं है । मैं यह जमीन तुम्हें कभी नहीं दे सकता हूँ । गरीब ने बहुत अनुनय–विनय सेठ से किया कि उसकी जमीन उसे लौटा दे पर सेठ पर इसका कोई असर नही पड़ा हार कर किसान ने अपनी जमीन की सारे कागजात लेकर कोर्ट में जा पहुँचा और जज के सामने खड़ा होकर रोने लगा ।

गरीब को रोता देखकर जज ने गरीब को अपने चेम्बर में बुलाकर उससे सारी बात सुनी । गरीब की बात सुनकर जज को सेठ पर बहुत गुस्सा आया और तुरंत सिपाही को भेजकर सेठ को कोर्ट में लेकर आने को कहा ।

सेठ के घर पहुँचकर सिपाही ने सेठ से कहा, ''तुमको जज साहब ने बुलाया है और अभी हमारे साथ कोर्ट चलना पड़ेगा ।''

सिपाही को देखकर सेठ समझ गया कि जमीन का मामला है । तभी जज ने हमें बुलाया है । सेठ सिपाही के साथ कोर्ट जा पहुँचा, सेठ ने देखा कि वह गरीब जिसकी जमीन कब्जा की थी वह जज के चेम्बर में एक कुर्सी पर बैठा हुआ था ।

जज ने सेठ जी को एक खाली कुर्सी पर बैठने को कहकर सेठ से पूछा सेठ जी आप बताइए इस गरीब की जमीन को कैसे अपना बता रहे हैं क्या आप के पास जमीन के बैनामा का कागजात है ? या जबरन कब्जा कर रखा है ।

जज की बात सुनकर सेठ ने कह जज साहब हमारे पास जमीन का कोई कागजात नहीं है मगर जमीन को मैं इस गरीब से खरीदना चाह रहा हूँ मगर यह जमीन हमें नहीं दे रहा है इसी से मैंने इसकी जमीन पर अपना कब्जा कर लिया है ।

सेठ की बात सुनकर जज ने कहा, ‘‘तुमने बहुत बड़ी भूल की है अगर मैं चाहूँ तो तुमको अभी जेल भेजवा सकता हूँ। मगर मैं तुमसे कहता हूँ इस गरीब की जमीन इसे लौटा दो और आज के बाद फिर ऐसी गलती की तो मैं सीधे तुमके जेल भेजवा दूँगा। तुम एक गरीब को बसा नहीं सकते तो उजाड़ भी नहीं सकते हो। तुमने गरीब की जमीन पर जबरन कब्जा कर के बहुत बड़ा गुनाह किया है।’’

सेठ ने हाथ जोड़कर कर जज से कहा, ‘‘जज साहब हमसे भूल हो गई मैं इस गरीब की जमीन पर से अपना कब्जा हटाने को तैयार हूँ। आज से मै इस गरीब की जमीन पर कभी अधिकार नहीं करूँगा।’’

जज ने गरीब से कहा अब तुम अपने घर जा सकते हो और अपनी जमीन पर रह खेती किसानी कर सकते हो।

गरीब ने हाथ जोड़कर जज को बहुत धन्यावाद दिया और कोर्ट से बाहर आ कर अपने घर की ओर चल दिया।

सेठ को आज अपनी भूल पर कोर्ट में बहुत बेइज्जत होना पड़ा, उसने सोच लिया अब जीवन में कभी किसी की जमीन धन-दौलत की बेईमानी नहीं करूँगा।

सफलता

- श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

ना कोई सोना सुन लो
ना कोई हीरा मान लो
है इससे भी कुछ बडा
है इससे भी कुछ बडा।

कई बार हारकर हाँ
कई कठिनाई पारकर
इससे मिलेगी मुलाकात
इससे मिलेगी मुलाकात।

देखकर जो लोग हँसे थे
पढे रहेंगे तब से दुख में
दुखी रहा था तब हाल तेरा
बन जायेगा अब तो कमाल।

आसान नहीं है इसे पाना
बलिदान और प्रयत्न बिना
प्रेरणास्रोत बनकर धर्म अपना
प्रभावी बन चमकोगे हर बार।

तिनकों का महल - एक मौन प्रेरणा

- डॉ. निशा
नंदिनी भारतीय,
तिनसुकिया,
असम

एक नन्हीं सी चिड़िया
धरती से तिनका-तिनका चुनती है,
हर कण में जैसे अपना सपना बुनती है ।

न कोई शोर, न कोई शिकायत,
न किसी से अपेक्षा, न कोई आहट
बस कर्म की निरंतर साधना में लीन,
अपने छोटे से जीवन को करती है नवीन ।

वह तिनका उठाती है,
चोंच में दबाकर उड़ती है,
बार-बार, अनगिनत बार-
न थकान का हिसाब, न दूरी का विचार ।

फिर एक-एक तिनके को
सावधानी से जोड़ती है,
कभी डालती है, कभी खींचती है,
अपने श्रम से एक संसार गढ़ती है ।

वह घोंसला
सिर्फ घास-फूस का ढाँचा नहीं,
उसमें उसका विश्वास बसता है,
उसकी मेहनत का इतिहास बसता है ।

हवा के थपेड़े जब उसे झुलाते हैं,
तो वह डगमगाता नहीं-
क्योंकि उसमें प्रेम की गाँठें बंधी होती हैं,
और श्रम की डोरियाँ सिली होती हैं ।

फिर उसी घोंसले में,
वह अपने बच्चों को जन्म देती है,
अपने पंखों की छाया में
उनका संसार रचती है ।

कौन सिखाता है उसे यह कला ?
किसने दिया उसे यह ज्ञान ?
न कोई गुरु, न कोई विद्यालय-
बस प्रभु की कृपा और अंतर्मन का विज्ञान ।

और एक हम हैं–
बुद्धि के शिखर पर बैठे हुए,
फिर भी उलझे,थके और निर्भर ।
हम भूल जाते हैं कि–
जीवन का सत्य तिनकों में छुपा है,
और सफलता का मार्ग श्रम में बसा है ।

यदि मनुष्य चाहे,
तो इस नन्हीं चिड़िया से सीख सकता है–
निष्काम कर्म, अटूट विश्वास,
और बिना अहंकार के जीने का उल्लास ।

पर विडंबना देखिए
पक्षियों को हमसे कुछ नहीं सीखना,
क्योंकि उनके पास प्रेम, सहयोग और संतोष की भाषा पहले से है ।

वे समझते हैं–
एक–दूसरे की चुप्पी,
एक–दूसरे की थकान,
और एक–दूसरे के मन की पुकार ।

उनका संसार छोटा है,
पर उसमें विस्तार है–
और हमारा संसार बड़ा होकर भी
अक्सर संकुचित और लाचार है ।

आइए
इस नन्हीं चिड़िया से सीखें–
तिनकों में महल बनाना,
परिश्रम में आनंद पाना,
और प्रेम से संसार सजाना ।

क्योंकि
जो तिनकों को जोड़ना सीख गया,
वह जीवन को संवारना भी सीख गया ।
और जो बिना अपेक्षा के कर्म कर गया–
वही सच्चे अर्थों में मानव बन गया ।

दरबार

– श्री. उदय किशोर साह,
बाँका, बिहार

चोरों के दरबार में चोर ही बना चौकीदार
गिद्ध दृष्टि लगी हुई है मंच पे बैठा सरदार
लाज शर्म की नहीं गतर में कोई सरोकार
एक ही रंग में रंगा हुआ है कुत्ते व सियार

लोक लुभावन सपनों की लगी झूठा कतार
आते-जाते राही पे करता पीछे से वार
निकल चलो होशियारी से जालिम है बाजार
लुट खसोट की सज गई यहाँ पे नई संसार

टोह के लिये कहता पाकेट मार से होशियार
मूरख जनता भूल से टटोलता पाकेट का द्वार
चोरों की पैनी नजर करता है सब का दीदार
आपकी पाकेट पे है करता शातिराना वार

आपकी पसीने की कमाई से इनको है प्यार
बुला-बुला कर ये जालिम करते हैं सत्कार
पलक पावड़े बिछा करते आपकी इन्तजार
हाथ की सफाई में माहिर इनका है कारोबार

मत पड़ना इन जुल्मी के चक्कर में ओ मेरे यार
वरना रोना ही होता है इनके जुल्म की प्रहार
सकरी गली से निकल पड़ो ना देखो वो द्वार
जहाँ लगी है इन चोरों की ऐसी मीना बाजार

पीकर के विषपान

– श्री. रमेश मनोहरा,
जावरा, म.प्र.

जीवन में आवे नहीं किसी तरह की आँच
ऐसे रहिये आप तो जैसे रहता काँच

काम अच्छा आप करें जीते फिर विश्वास
ताकि होने उसे लगे पूरा ही आभास

रहता है अंधकार यदि आपके ही समीप
दूर इसे आप करिये जलाकर यार दीप

कुदरत ने जो लिख दिया चलता वही विधान
मीरा फिर भी बच गई पीकर के विषपान

कोई जाता है जल्दी कोई जाता बाद
मौत आती सदैव ही बनकर के जल्लाद

समझ न सके हैं अब तक कुदरत की हम चाल
कब हमें धनवान करें और करें कंगाल

आदमी के जीवन में आती है जब भोर
प्रकाश फैले देखिये उसके चारों ओर

पूजो उसको सब यहाँ होते जो गुणवान
सीखे उससे ज्ञान वे हरदम ही श्रीमान

चेहरे पर तो छा गया देखो उनके नूर
अच्छे दिन कटने लगे आये हैं भरपूर

अवसर मिलते ही करें वे दूजों पर घाव
मन में रखते हैं नहीं वे सकारात्मक भाव

ये पीढ़ी ना बाँचती गीता, वेद, पुराण
बढ़–चढ़कर देती सदा इस पर ये व्याख्यान

सोच बुरी रखते अगर बुरा आपका होय
इक दिन रमेश देखना देखो जी वो रोय

माँ

– श्री. रूपा रिसाल चालिसे,
काठमांडू, नेपाल

सुबह की किरण में ये आँख ढूँढती हैं
तेरी नामों से हमारी सारी दर्द छुटती है
बहारें हजारे फूल का मौसम खिलती है
माँ के बातों का मीठी सुगन्ध महकती है ।

निस्वार्थ प्रेम भाव आँखों में छलकती है
माँ की ममता हरदम सपने महकती है
हमारे दिल के हर धडकन में बस रही हो
बहुमूल्य रत्न इस दुनियाँ में सज रही हो ।

चारों तरफ महकते गुलाबों के नयन से
देखती हो तुम हमको उमंग के अयन से
जहाँ जाऊँ तेरी यादों का छाव मिलती है
धैर्य का सागर हृदय का खाव दिखती है ।

हमको मिली उम्र भर की सितारे दिखने को
पर्वत, नदीयाँ झील हरियाली तु लिखने को
माँ तेरे दर्द भरे सपने दुनियाँ क्यों भूल गए
तुम्हारी संस्कार में हम बच्चे क्यों झूल गए ।

रातों की अँधेरी में ये दिल ढूँढती है
तेरी आँचल की खुशबू में प्यार ढूँढती है
दिल की हजारे बातों में लोरी गूँजती है
माँ के बातों का मीठी सुगन्ध महकती है ।

आह्वान

– श्री. प्रिया देवांगन 'प्रियू',
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

जाग उठो हे वीर पुत्र तुम, अपनी ताकत को पहचानो ।
नस–नस भर लो नई उमंगे, लक्ष्य नेक अंतर्मन ठानो ।।
शूल मिलेंगे तुम्हें डगर पर, धूल धूसरित पाँव तुम्हारे ।
रक्त बहे तो डर ना जाना, थम ना जाना किसी किनारे ।।

प्रण लो भारत की रक्षा का, नित सबल राष्ट्र निर्माण करो ।
तज कर अपनी गहरी निद्रा, कदम बढ़ाओ हथियार धरो ।।
छुप कर बैठे छलिया सारे, चुन–चुन प्रहार वे करते हैं ।
घात लगाते गीदड़ जैसे, नोच–नोच कर दम भरते हैं ।।

हे भारत के वीर सपूतो, कर दो इनकी बोटी–बोटी ।
करो धराशायी दुश्मन को, होती जिनकी नीयत खोटी ।।
शीश तुम्हारा कभी झुके ना, जीना दुश्वार नहीं होगा ।
एक–एक को धूल चटा दो, पीछे से वार नहीं होगा ।।

आसमान जैसी चट्टानें, इर्द–गिर्द है गहरी खाई ।
साहस रख कर चलना वीरो, देख डरो ना ये कठिनाई ।।
धन्य करो यह जन्म तुम्हारा, दे दो अपनी तुम कुर्बानी ।
याद रखेगी दुनिया सारी, नाम देश के करो जवानी ।।

मनहरण घनाक्षरी छन्द

(छन्द युग आएगा)

– डॉ. पवन कुमार पाण्डे,
निजामाबाद, तेलंगाना

जीवन तो जीवन है, अच्छा–बुरा कह आप,
हाथ से अपने इसे, जाने मत दीजिए ।
कटु तो मधुर कभी, देता अनुभव घने,
विष मिले या कि सुधा, रस मान पीजिए ।
व्योम–सा विस्तार लिए, शृंग–सी विराटता भी,
सिन्धु–सा ही गहरा यह, किनारा न कीजिए ।
ऋतु–सा ही जीवन तो, धरता अनेकों रूप,
मनमौजी जैसे मिले, हाथों–हाथ लीजिए ।।

सम्मान

– एडवोकेट डी.के.कनौजिया,
दिल्ली

सम्मान सिर्फ महिला दिवस पे नहीं दिखाना चाहिए,
कभी ऑफिस में भी उनका साथ देना चाहिए ।
उनकी मेहनत और संघर्ष को समझना चाहिए,
उनकी बातों को भी गंभीरता से लेना चाहिए ।

जब वो किसी काम में लगती हैं, तो दिल से करती हैं,
उनके हर फैसले में कुछ खास बात होती है ।
काम के मोर्चे पे जब वो कदम बढ़ाती हैं,
हमारी जिम्मेदारी है, साथ में खड़े रहते हैं ।

उनकी मुश्किलों को समझे बिना आगे बढ़ना,
ये तो ठीक नहीं, हमें बदलना होगा अपना नजरिया ।
महिला दिवस बस एक दिन न हो,
हर दिन उनका सम्मान हो, यही हमारा कर्तव्य हो ।

समाज में बराबरी और इज्जत का अहसास हो,
जहाँ हर महिला को अपना हक और मान हासिल हो ।
तो सम्मान सिर्फ एक दिन का न हो,
हमेशा, हर पल, हर जगह वो महसूस हो ।

कविता की मधुरता
शब्द में भी है, भाव में भी है ।

क्या मिलता है मुफ्त में ?

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

ये हवा ये पानी,
ये धूप ये जंगल पहाड़,
नहीं कह सकते इसे मुफ्त का,
हर जीव हर इंसान को
ये प्रकृति की देन है,
इनके अनुसार रहो
ताउम्र सुख चैन है,
बिना पानी सींचे कलियाँ भी नहीं खिलती,
माँगो तो भी फ्री में गालियाँ भी नहीं मिलती,
शतरंज के प्यादे,
और नेताओं के वादे,
बिना लाभ के नहीं होते,
महीने भर का जगा,
फिर साल पाँच रहते सोते,
ये चावल चना दे रहे मुफ्त का कहते,
मगर हमारे करों के हिस्से इसमें छुपे रहते,
शिक्षक बिना पैसे नहीं पढ़ाता,
बिना पैसे आंतरिक व्यवस्था नहीं चल पाता,
बिना वेतन मजदूर मजदूरी को नहीं जाता,
बिना वेतन न्यायाधीश न्याय नहीं दे पाता,
हर कर्म के पीछे स्वार्थ छुपा होता है,
मजलूमों में भूख,गरीबी, दर्द छुपा होता है,
सिर्फ बद्दुआ निःस्वार्थ लोग करते हैं प्रयुक्त,
एक यही तो है जो मिलता है बिलकुल मुफ़्त ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை	புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

अतिबत्त नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

उमड़ती लहरों को अपने प्रयासों से रोक सकता है कौन ?
उदित सूर्य देव की किरणों की रोशनी को पर्दा पहना सकता है कौन ?
खिले हुए फूलों से उसका सुगंध दूर कर सकता है कौन ?
उच्चरित शब्दों को उसके मतलब से अलग दिखा सकता है कौन ?
भला बुरा कहकर नास्तिक का रूप अपनाकर परम पद पाया कौन ?
दिन और रात की इस जिंदगी को दिशाहीन बनाया है वह कौन ?
बढ़ती भक्ति को रोक सकता है इस जग में कौन ?
परम भक्त की आस्था को अपने प्रयासों से मिटा पाया है कौन ?
लहरों से भरा समुद्र वह बार-बार बुलाता रहता है सज्जनों को
बंगाल की खाड़ी में उमड़ते लहर बिखेर देते हैं सुंदरता को चारों ओर
समुद्र तट की सुंदरता मन मोह लेती है लोगों को पास बुलाती है
नभ की शोभा बड़ा देते हैं नील-नील लहरें उमड़ उमड़कर वहाँ
नागपट्टनम नाम है तमिलनाडु के प्राचीनतम शहरों में यह भी एक है
चोल राजाओं के शासन में व्यापार का केंद्र बना रहा यह प्रदेश
चोल राजा शिव भक्त महान ठहरे नगर भी ठहरा शिव भक्ति से भरा
शिव शिव हर हर कहकर मन भरते यहां के दिव्य भक्त मानस में शिव भरते ।
समुद्र तट जहाँ कहीं हो वहाँ बसते वहीं रहते दिल के बहुत ही प्यारे
कपट का नाम तक नहीं जानते काम सिर्फ वे जानते हैं प्यारे मछुआरे
मछुआरों की इस परंपरा में उदित हुए थे भक्त अतिबत्त नायनार
नेता ठहरे नेक और नियति से भरे ठहरे संत अतिबत्त नायनार
दल जब जाल सहित समुद्र में जाता जाल बिछाकर समुद्र से मछलियाँ पाता
हर दिन का क्रम है यह जब कभी जाल बिछाकर मछलियाँ वे लाते
सस्नेह उनमें से एक मछली महादेव के नाम पर समुद्र में छोड़ देते
अतिबत्त नायनार किया करते थे सभक्ति हर दिन महादेव के नाम लेते ।

भोलेनाथ भोले तो है दिल से प्यार बड़ा देते हैं वही देवताओं में सबसे
महादेव नाम अपना सार्थक बनाते हैं अनेक कर्म यहाँ रचाकर
परमेश्वर महेश्वर परीक्षा भी कर लेते कभी-कभी फिर उन्हें अपनाते
आई बारी अब अतिबत्त नायनार की उनकी भक्ति की परीक्षा की
जाल में फंसने लगीं बहुत काम मछलियाँ खाली होते गए जाल
हाल कुछ हाल जो था बदलने लगा धीरे-धीरे बनकर अब बेहाल
फिर भी थके नहीं करते रहे वही क्रम संपूर्ण मन से नायनार
कभी ना रुके कभी न संचय करने का सोचे अतिबत्त नायनार ।

दिन ऐसे निकलने लगे जल में फंसने लगीं एक दो मछली वहाँ
एक भी क्यों ना हो शिव के नाम पर बहा देते उसे समन नायनार
परिवार का बन गया था अब बहुत ही बुरा हाल करना क्या था ?
मछलियों के बिना कमा पाएँगे कैसे मन में सोचने लगे सारे रिश्तेदार
पत्नी व्याकुल हो गई थी प्यारे बच्चे पड़े रहे भूखे दिन और रात
घर का ही हाल यह नहीं था पछताने लगे उसके दल के हर व्यक्ति
भक्त थे महानतम भक्ति के सिवा यह क्या कुछ कर पाते ?
एक मछली भी मिल जाए बिना सोचे उसे महादेव का नाम लेकर बहने देते ।

एक दिन जाल में फंसी थी एक सोन मछली जवाहरतों से सजाई गई
एक उस मछली को बेचे तो खिल जाएगी परंपरा भरेगी खुशहाल हर कहीं
एक पल भी नहीं सोचे बहने दिए सस्नेह कह शिव उसी के
सानंद प्रकट हुए सांब सहित आए महादेव ऋषभ वाहन उसपर
अपने साथ ले गए अपने भक्त को शिव पद पाए अमर अतिबत्त नायनार
आज भी त्योहार मनाया जा रहा है इस समुद्र तट पर हर साल
सोन मछली जो पकड़ा गया उसे समुद्र में छोड़ देते अतिबत्त नायनार
अपने रूप में आकर भक्त को अपने साथ ले जाते महादेव ऋषभ वाहन पर ।

अति भक्त थे नायनार, अतिबत्त नायनार ।
अतुल भक्ति के सहारे, कर पाये भव पार ।।

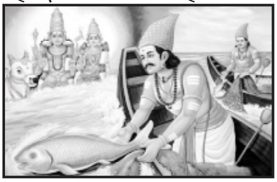

गहराई

– श्री. उषा टिबरेवाला 'मीरा',
चेन्नै, तमिलनाडु

समुद्र का रहस्य,
जैसे आँखों का समंदर
जैसे रहस्यमयी गहराई समुद्र है
वैसे ये आँखे रहस्यमय गहराई का मंजर है
दिन रात समुद्र की लहरें आती जाती लेती अंगड़ाई,
वैसे ये आँखों का,
बिन लहरों के दिखती गहराई,
समुद्र में सैलाब उठे तो प्रकृति को हिला देता है,
दिल का सैलाब,
आंतरिक शक्ति हिली, ज़िन्दगी मिटा देती है,
समुद्र की गहराई कोई न जान पाए, उसमें छिपे या सीप मोती,
ये आँखें भी, रहस्यमय समंदर है कोई,
जिसमें हर जज़्बात उतर पर जान ना पाया कोई ।
लहरों ने अपना मिलन, किनारों से कभी न कर पाया,
आते जाते के सफर का दर्द, कोई समझ न पाया,
इन आँखों की बस ऐसे ही अश्कों की बात है,
हर बूँद में एक अधूरी दास्ताँ की सौगात है,
समुद्र देखता आसमान, बादलों से बतलाने को तरसता, कब वर्षा की मीठी बूँदें बरसे,
मुझमें आलिंगन कर
मज हो जाय,
न मौसम,ना पैगाम दे
आँखों में घिरते हैं, ऐसे बादल हर शाम,
बरस भीतर का सब कुछ बहा ले जाए ।।

कुछ करो जग जननी दुर्गा महारानी

(भक्ति गीत)

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

जय जय हे आदिशक्ति जग जननी दुर्गा माता,
तुमसे तो है मैया अपना जन्म जन्म का नाता ।

कलियुग में असुरी शक्तियाँ कर रही हैं मनमानी,
कुछ करो हे जगत जननी भवानी, दुर्गा महारानी ।
संस्कार विहीन होती जा रही है अब सारी दुनिया,
सच्चाई पर चलनेवाले को ही, हो रही परेशानी ।
कुछ करो हे जगत जननी.....

जगत के कोने कोने में, अच्छाई हो रही बदनाम,
बुराई करनेवाले लोगों के, सफल हो रहे हैं काम ।
हे आदिशक्ति दुर्गा मैया, तुम पाप विनाशिनी हो,
महिषासुर मर्दन जैसे ही तलवार निकालो पुरानी ।
कुछ करो हे जगत जननी.....

मिटता जा रहा है दुनिया से, मानवता का मान,
धर्म पुण्य का असुरी शक्तियाँ, कर रही अपमान ।
सारी दैवी शक्तियों के साथ, तुमको आना पड़ेगा,
बाहर से जो सज्जन दिखते, कर रहे हैं बेइमानी ।
कुछ करो हे जगत जननी.....

भारतीय संस्कृति को लेकर मचा हुआ है संग्राम,
जिसके मुख में जो आवे है वही करता बदनाम ।
तुम ही बताओ माता, कैसे चल सकता है काम ?
पाप अधर्म के आगे, धर्म पुण्य होते पानी पानी ।
कुछ करो हे जगत जननी.....

दो कविताएँ

– श्री. राजकुमार जैन राजन,
चित्तौड़गढ़, राज.

1. चुपचाप

उस गुलाबी शाम में
पुरवाई
उन्मुक्त–सी
खुशबूदार झोंकों के संग
बह रही थी
और हम
बुन रहे थे सपने
चुपचाप
कहीं
क्षितिज के आस–पास
आँखों में
पल रहे थे ख्वाब
तुम
एलबम की तस्वीरों से
अपनी यादों को
ताज़ा कर रही थी
अपनी आँखों में उगे
कुसुम के सहारे
और मैं पिघल रहा था
तुम्हारी कोमल हथेलियों में
मोम की तरह
लहलहा रही है
इन आँखों के भीतर
एक उन्मुक्त झील
जिसमें
मेरी उम्र जमकर
बर्फ हो गई है !

****

2. चलो, फिर से जी लें

तुमने दिए थे जो
गुलाब
आज भी सहेज रखे हैं मैंने
अपने दिल की किताब में
जिसकी खुशबू
यादें बन महकती रहती है

अच्छा लगता था
तुम्हारे इंतज़ार में
भावपूर्ण प्रेम पत्र लिखना
पढ़कर उन्हें
कई कई बार उन्हें

खुद ही
मन्द-मन्द मुस्करा देना

जब दर्द का
कोई अहसास
उतरता था दिल में
एक मासूम-सी ख्वाहिश बन
हर खुशी को समेटे
तुम चले आते थे
मेरे मन के द्वार पर

खोई मोहब्बत
दबे पाँव आ धमकती है
दिल के सूने कोनों में
जज्बात के ताने-बाने
समेट कर कर
पुराने पड़ चुके प्रेम पत्रों
को फिर से सहेज लें

समय की उधेड़बुन में
हम खो न जाएँ
चलो, फिर से जी लें
प्यार के उन पलों को
जो दिल में सजे सपनों को
सावन-सा महका दे
इस जीवन में
चमक भर दे सितारों-सी
फ़िर से
चलो एक बार जी लें ।

पैरानॉइड

- श्री. रेमी शर्मा,
कार्बी आंगलोंग,
असम

शहर में आई नई बीमारी के डर से
आँखें दीवार पर टाँग दी हैं मैंने
नाक रख दी है बक्से के भीतर
टुकड़ों में बिखरा रहे तो बच जाता है आदमी

'हमारी माँग माननी ही होगी'
ढोल-नगाड़े बजाते एक टोली जा रही है
उन्हें चाहिए वो सात पुश्तों वाला संदूक
'निठल्ले निकम्मे'
तुम्हारी भूख में खट्टा और खट्टे के साथ कड़वा
उसी में हम खीर के बीज बोएँगे

सपने में चमेली का बेटा सोना पकड़ता है
उठते ही दौड़ लगाता है खेतों की ओर
शाम की बैठकी में हम स्वाद बाँटते हैं
मछली का - और चमेली का भी

रोग घर कर गया है - यह खबर फैली
बड़े-बड़े लोग घुस गए संदूकों में
चमेली घुसी गड्ढे में
छोटी जात का छोटा संदूक

हमारा पुरखा को
बीमारी ढूँढ नहीं पाती उनकी नाक और कान

दिल अपनों की तलाश में हैं

– डॉ. अशोक, पटना, बिहार

अधूरी रातें
सन्नाटे में गूँज उठे
दिल की आवाज़
सपनों की राह
अजनबी मंज़िलों में
खोया सफ़र
साया कहीं दूर
संग–साथ का इंतज़ार
मन अकेला
हवा में खुशबू
मिलन की आस जगाए
दिल धड़कता
आँखों में नमी
यादों की परछाई रहे
साया अपनों का
चाँद की रोशनी
सफर को रौशन करे
अंधेरा घटे
फूलों की मुस्कान
सांत्वना देती राह पर
आशा जगाए
पथरीली राहें
चलते–चलते थक जाएँ
मगर उम्मीद रहे
सुरभित बहार
दिल को मिलन की राह दिखाए
सपने सजाएँ
गीतों की लय
मन की तन्हाई में बजे
सुकून लाए
हर कदम पर
साथ की तलाश रहे
दिल न हारे

भार

– श्री. आशीष द्विवेदी साथी,
डूंगरपुर, राजस्थान

सपने उनके कभी साकार नहीं होते
जिनमें प्रयासों के आकार नहीं होते ।
जगानी पड़ती है अपनी अंतर आत्मा
कोई देवता यूँ ही अवतार नहीं होते ।
प्रेम त्याग सेवा और समर्पण होता है
लोग यूँ ही रिश्तेदार नहीं होते ।
शुद्ध सात्विक यदि आहार होता
लोग कभी यूँ बीमार नहीं होते ।
काम कोई भी हो छोटा नहीं होता
बात इतनी समझे कोई बेकार नहीं होते ।
इस जमीन की उपज हैं हम सभी
साथी धरा पर कोई भार नहीं होते ।

लड़लड़ कर मर रहे हैं

– श्री. मदन सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

लोग भूखे सो रहे हैं
वही भूखे मर रहे हैं
इरान व इस्राइल में
लड़लड़ कर मर रहे हैं
मस्टंडे एतरा रहे हैं
मासूम बच्चे मर रहे हैं
चहूँ साइरन बज रहें हैं
फौजी सैनिक सज रहे हैं
कहीं तेल बह रहा है
कहीं खून बह रहा है
लगता है सबकुछ देखकर
संसार बहरा है
मानवता सिसक रही है
धरती खिसक रही है
अंजाम क्या होगा?
जब खंडहर बन जायेंगे
खून पसीने का गारा
कब कैसे फिर बसायेंगे
थम जा अब अरे कातिल
कुछ हासिल नहीं अब होगा
बीतेगी तुम पर तब क्या होगा

मन बनजारा

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

मन बनजारा भटक रहा है
पल में नभ में,पल में थल में,
देर ना लगती इसे सफर में,
जहाँ न रवि–शशि किरणें पहुँचें,
यायावर मन पहुँच रहा है ।
मन बनजारा भटक रहा है ।
कभी दूर तक दौड़ा जाता,
कभी निकट भी ना जा पाता ।
भूतकाल में जाकर क्षण में,
विगत स्मृतियाँ खोज रहा है ।
मन बनजारा भटक रहा है ।
जीवन में कितना कुछ पाया,
पाकर, फिर से सब कुछ खोया ।
कौन है अपना, कौन पराया,
इन प्रश्नों से उलझ रहा है ।
मन बनजारा भटक रहा है ।
जीवन एक अबूझ पहेली,
किस्मत सबकी नहीं सहेली ।
कोई सुखी तो कोई दुखी है,
इस उलझन में अटक रहा है ।
मन बनजारा भटक रहा है ।

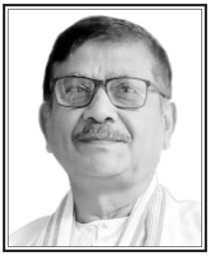

पत्थर पर नदी का इतिहास

– श्री. पवित्र कुमार नाथ,
बंगाईगाँव, असम

नदी पत्थर के पाँव छूकर
लौट आती है
रेत को चीरते हुए
किनारों को काटते हुए
समय की धारा के साथ

पहाड़ का पत्थर
पत्थर नहीं रहता

काट–काटकर मनुष्य
पत्थर को नया रूप देता है

पत्थर के सीने पर
नदी का इतिहास
लिखा रहता है

नदी को काटा नहीं जा सकता
स्वयं को गढ़ते और तोड़ते हुए
नदी बनाती आई है
अपनी मूर्तिकला
युग–युग से ।

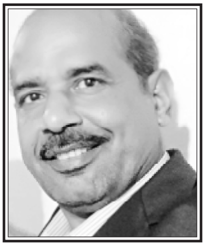

मन मेरा डोले भोले

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

कहाँ–कहाँ मन मेरा डोले,
पवन गति से इत–उत दौड़े,
समय की घड़ियां रुक नहीं सकतीं,
सार समझ ले रे मन भोले ।
कहाँ–कहाँ मन...
आना–जाना चलता रहता,
कौन यहाँ रुक पाया है,
घड़ी किसी के पास खड़ी है,
फिर भी मन को भरमाया है ।
कहाँ–कहाँ मन...
तन है एक पत्ते–सी कुटिया,
गंगा से भर ले छोटी लुटिया,
यहीं कहीं तेरा भाग बंधा है,
खुशबू से भर दे तू बगिया ।
कहाँ–कहाँ मन...
समय की दूरी है मजबूरी,
फिर भोले से कैसी दूरी,
नयन बिछा दे चरण में उसके,
होगी कामना तेरी पूरी ।
कहाँ–कहाँ मन...

नारी-नारायणी

– श्री. रवीन्द्र कुमार राणा,
बुलंदशहर, उ.प्र.

विश्व धरा की अमूल्य धरोहर है नारी ।
सीता राधा दुर्गा सरस्वती माँ है नारी ।।
पिता, पति, भाई, बेटा की माँ है नारी ।
घर–आँगन की प्यारी फुलवारी है नारी ।।
हर परिवार में खुशियाँ महकाती है नारी ।
पुरुष विहीन घर में कष्ट सहती है नारी ।।
मन–मोहिनी सोलह सिंगारी है नारी ।
वसुधैव कुटुम्बकम की पहचान है नारी ।।
मान–सम्मान की अधिकारी है नारी ।
पूजा–उपासना में सबसे आगे है नारी ।।
बच्चों के संस्कारों की किलकारी है नारी ।
गृहलक्ष्मी नारायणी बन बलिहारी है नारी ।।

घर

– श्री. रेखा
बरकटकी,
जोरहाट, असम

अनजान–सी एक
काई से ढकी चौखट पर प्रतीक्षारत वे...
अविरल वर्षा में भी न भीगे
प्रचंड गर्मी में भी न घबराए
भूख से व्याकुल एक किसान
घुटनों तक फैली मैली पीली धोती में
निराश जीवन की प्रतिलिपि लिए
अब है अगहन की फसल काटने का मौसम
शीत और ओस की मीठी युगलबंदी में
ठिठुरती रात का आत्म–विलाप
ऐसे मौसम में कब तक प्रतीक्षा करेंगे वे ?
अधीर विश्वास से किसी के
हृदय के अंतःकक्ष में
झाँकते हैं थके नयन से
शीतार्त रात क्या सहज ही भोर होती है ?
अधूरा बना घर
पूरा होने को अभी समय है
किसान क्रमशः निर्बल होता जा रहा है
घर के बन जाने तक
वे प्रतीक्षा करेंगे या नहीं !!

फागुन की बारिश

- श्री. अनुभवी मदन,
अमगुरी, असम

फागुन के आकाश में आज
चुपचाप बारिश उतर आई है,
सूखी धरती की छाती पर जैसे
तुम्हारी यादें झर रही हैं।
पलाश की लाल आभा में
दिल की छुपी बातें चमक उठती हैं,
बारिश की मधुर ध्वनि में बहकर
अधूरी मोहब्बत की मीठी अनुभूति
आती है।
मलय समीर लेकर आई है
तुम्हारी खुशबू इस शांत संध्या में,
मन की गहरी भावनाएँ आज भी
तुम्हें ही ढूँढती हैं मौन में।
जुगनुओं से सजी इस फागुन रात में
मैं मन के द्वार खोल देता हूँ,
बारिश की हर बूंद में
जैसे तुम्हारा ही स्पर्श महसूस करता हूँ।
प्रकृति हरी है, दिल भी हरा है
प्रेम के निःशब्द गीतों में,
फागुन की बारिश की ध्वनि में
बज उठती है एक धुन-तुम्हारे नाम की।

श्रावण की ठुमरी और शहतुत

- डॉ. हीरेन्द्रकुमार भागवती,
गुवाहाटी, असम

श्रावण आया रिमझिम लेकर,
शहतुत भीगा ओस में,
ठुमरी छेड़ी बादल ने जब,
डूब गया मन रोज़ में।

काली-काली बेरियाँ झूमें,
टहनी-टहनी गाती है,
बूँद-बूँद की लय पर देखो,
धरती थिरकती जाती है।

मीठा रस है शहतूत में जो,
वो सावन का दर्द है,
ठुमरी में जो दर्द मिला है,
वो मिलने का फ़र्द है।

पत्ते-पत्ते पर जल लिखे हैं,
प्रेम के अनकहे गीत,
शहतुत के लाल-काले रंग में,
घुली हुई है प्रीत।

न जाने कब ये सावन बीते,
न जाने कब ये ठुमरी थमे,
शहतुत की डाल पकड़े खड़े हैं,
भीगते हम, भीगते तुम...

हाइकू की तरह

– श्री. आगमनि फुकन शइकीया,
शिवसागर, असम

(क)

पिछली सर्दियों में जो
बर्फ गिरी थी –
आज भी सिर ढाँपे सो रही है

(ख)

सारी रात
आग के बीच ही रही
वह केतकी पक्षी

(ग)

भोर की बारिश में
कोमल घास ने
तन को भिगो लिया

(घ)

बर्फ से ढके पहाड़ के उस पार
झींगुर की आवाज़ –
स्पष्ट सुनाई दी

(ङ)

शेफाली के पते पर
लापता है
शरद का समाचार

आश्रय का सपना

– डॉ. बंदना तामुली,
गुवाहाटी, असम

पिता के प्रिय घर में
कितने रंगीन सपने थे साथ
बिरिणा के पत्तों की झाँकियों से
जो तारे दिखे थे
वे सूरज से भी तेज थे
साँसें भी
केवल चाँद
और सूरज की आभा से खेलती थीं
बुने थे गहरे, कठोर बंधन
जैसे अग्नि से रंगे रंगीन सपने
खाली घर की खालीपन में
लंबी सपनों की यात्रा का अंत हुआ
जिस दिन उनकी प्रिय पत्नी
भूतनाथ की चिता पर दहकती जली
जलते दोनों गाल
अश्रु-बिंदु शीतल न कर सके
तारों भरे आकाश में भी
अरुण ने खेल न खेला
खट् खट् खट्
हृदय की धड़कन बढ़ती गई
स्मृतियाँ काली राख से ढँककर
आँहत वृक्ष की डाल पर लटकी रह गईं ।।

कर्मनिष्ठ का जीवन सुखमय

– डॉ. त्रिलोकी सिंह,
प्रयागराज, उ.प्र.

जीवन में प्रमाद मत करना,
कर्मशील बनकर रहना ।
सर–जल–सा स्थिर मत हो जाना,
सरि–जल–सा हर पल बहना ।। 1 ।।

जीवन में आलस करने से,
प्रगति काम की रुक जाती ।
सदा कर्म में रत रहने से,
काया नाना सुख पाती ।। 2 ।।

कर्म–विमुख होकर कोई भी,
सफल नहीं हो पाता है ।
खाकर–सोकर ही वह अपना,
सारा समय गँवाता है ।। 3 ।।

कर्मनिष्ठ का जीवन सुखमय,
मान सदा वह पाता है ।
ऐसा प्राणी दुनिया भर में,
अपना यश फैलाता है ।। 4 ।।

तो फिर पूरी शक्ति लगाकर,
यश–विस्तारक कर्म करो ।
मानवता के पोषक बनकर,
पालन मानव–धर्म करो ।। 5 ।।

तभी तुम्हारी उन्नति होगी,
भाग्य तुम्हारा चमकेगा ।
सद्‌गुण–सुमनों के खिलते ही,
जीवन–उपवन महकेगा ।। 6 ।।

तो फिर उठो ! बढ़ो तुम आगे,
स्वप्न सभी साकार करो ।
व्यापक सोच हृदय में रखकर,
सबसे सद् व्यवहार करो ।। 7 ।।

चित्र

– श्री. अजंता तामुली फुकन,
लंका, असम

अलग मन, अलग चित्र
धुंधला अथवा स्पष्ट
हृदय में गहरे उतर जानेवाले
चित्र कहते हैं जीवन की बात
चित्र गाते हैं यौवन के गीत
चित्र में बंद हैं स्मृतियाँ
स्मृतियों से समृद्ध है जीवन
बुढ़ापे की लाठी
बचपन की नदी किनारे की शाम
चित्र में खो जाती है वह प्रियता
समय की धारा में चित्र का विस्तार
उसका स्वाद अथवा स्वीकार्यता
टँगी रहती है एल्बम के पन्नों पर...

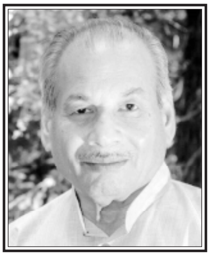

श्री हनुमान जन्मोत्सव की बधाई

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

जय श्रीरामा जय श्री रामा,
पवन पुत्र जपते श्री रामा ।।
अज़र अमर अतुलित बल धामा,
करिये सब प्रकार प्रभु पूरन कामा
दिन रात जपे जय जय श्री रामा,
भजिये महाबीर रामभक्त हनुमाना ।
जय श्रीरामा...
अष्ट सिद्धि नव निधि दाता तुम,
अंजनिपुत्र पवनसुत भक्त हम,
रूद्र अवतार तेज़ पुंज बलवाना
दिन निशि भजते जो श्री रामा ।
जय श्रीरामा...
बल बुद्धि विद्या देनेवाले,
भक्तन के दुःख हरनेवाले,
राम प्रभू सेवक रुचि राखी,
हृदय बसत रघुवर सुर साखी ।
जय श्रीरामा...
चरण शरण दीजै हनुमाना,
सब सुख दायक श्री अभिरामा,
चरणों में बसत, करत भय मुक्त,
राम अनंतनाम, अति शक्तियुक्त ।
जय श्रीरामा...
श्री हनुमान अवतरण गावत,
आदित्य नितप्रति तुमहि भजत,
कर दीजै सब पूरन कामा,
जय श्रीरामा, जय श्रीरामा,
पवन पुत्र जपते श्री रामा ।।
जय श्री रामा, जय श्रीरामा ।।

शिमल-समुद्र

– श्री. नव राजन,
राजमयांग, अमस

ऐसा क्या है
कि बार-बार डूब जाना चाहता हूँ
तुम्हारे होंठों के शिमल-समुद्र में ।
कृष्णचूड़ा की नाव चलाकर
तुम हर बार मुझे
उठा लेती हो,
और
ले जाती हो फागुन की ओर ।
जानता हूँ-
फागुन हमेशा नहीं रहता ।
तो फिर
फागुन के अंत में ?
तुम हो ।
और क्या चाहिए !

वनज्वाला

– श्री. गीतांजलि बरकटकी,
नामरूप, असम

आग जल रही है,
अब चारों ओर आग है ।
जंगल की छाती में
अचानक भड़क उठती है आग,
लपटें उठती हैं हु-हु कर ।

सूखे पत्तों में, घास में,
बाँस के झुरमुटों में-
आग की लपटों में
झुलस जाता है जीवन,
पेड़ों के पत्ते, हरी छाँव-
पक्षियों का एक झुंड
क्षण भर में राख हो जाता है ।

कोयल के घर जल उठते हैं,
पशु-पक्षियों की करुण पुकार
धुएँ से ढक जाता है आकाश-
आँखों में भर आते हैं आँसू ।

आग जलती है,
साँप-मेंढक सब भागते हैं-
यह प्रतिशोध है,
प्रकृति का भयानक प्रतिशोध ।
धरती का हृदय शून्य हो जाता है ।
दम घुटने लगता है,
सड़े हुए पेड़ पर लटका रहता है
एक हिरण का शरीर,
एक पक्षी
और न जाने कितनी ही जिंदगियाँ ।

जंगल फुसफुसाकर कहता है-
सावधान हो जाओ,
सावधान हो जाओ ।
पेड़ों को फिर से रोपो ।

लकड़हारा भी चिल्ला उठता है-
वनाग्नि सिखाती है सतर्कता ।
हमारी और तुम्हारी धरती एक ही है ।

हरियाली ही जीवन है,
हरियाली की मृत्यु का अर्थ है
श्मशान की आग ।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

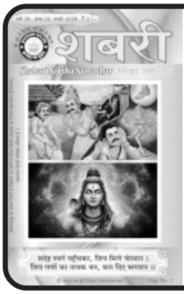

पाठकों के पत्र ...

आदरणीय नमस्कार ।

शबरी के बेर की तरह मीठे प्रकाशन हेतु साधुवाद । बधाई व हार्दिक शुभकामनाएँ ।

आपके कार्यों और हिन्दी प्रेम व सेवा को सादर नमन ।

– श्री. सुखवाड़ा आश्रम, भोपाल

नमस्ते जी, छठे शबरी परीवार के संगम के कार्यक्रम में अतिथियों का भाषण और भोजन व्यवस्था, सह-अध्यापकों का आदान-प्रदान और सम्मान आदि का प्रबन्ध बहुत अच्छा किया गया था । धन्यवाद जी ।

– श्री. नेल्लै वडिवेलु, कोवै, तमिलनाडु

जी, नमस्ते । कल पोल्लाच्ची में जो परिवार सम्मेलन चला गया वो बहुत अवर्णनीय था । सचमुच परिवार से मिलने का मौका मिला था । उसके साथ हमारे जैसे प्रचारक/प्रचारिकाओं का सम्मान भी किया गया था । हमें गर्व की बात है कि आप के परिवार में मैं भी हूँ । बहुत बहुत धन्यवाद जी ।

– श्री. विजयलक्ष्मी, तिरुप्पूर, तमिलनाडु

बहुत बहुत धन्यवाद जी इस तरह एक मौका प्रदान करने के लिए मैं हमेशा शबरी परिवार के अभार रहूँगी । पहेली हिन्दी भाषा को मै सादर प्रणाम करती हूँ । क्योंकि वो राज्य भाषा या राष्ट्रभाषा किसी भी हो लेकिन मेरी जीवन का अर्थ है हिन्दी भाषा । मेरी परिवार चलाते के चाबी है यह भाषा । धन्यवाद जी ।

– श्री. तंगम, कोवै, तमिलनाडु

पोल्लाच्ची में आयोजित शबरी परिवार मिलन कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । इस सुंदर कार्यक्रम का हिस्सा बनकर और आपका सम्मान पाकर मैं बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ । यह एक यादगार और शानदार आयोजन था । पूरी टीम को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ और धन्यवाद !

– श्री. सुमती. तूत्तुकुडी, तमिलनाडु

नमस्ते जी... मुझे इस अवसर और सम्मान से नवाजने के लिए मैं आपकी हार्दिक आभारी हूँ । धन्यवाद ।

– श्री. रोमा, पल्लडम, तमिलनाडु

नमस्ते जी । शबरी परिवार मिलन में भाग लेकर मुझे बहुत खुशी हो रही है । इस परिवार मिलन के वजह दूर-दूर के प्रचारकों से मिलने का मौका मिला । स्वागत, सम्मान और खाने-पीने का प्रबंध बहुत ही अच्छे ढंग से किये गये थे । आप सभी को हार्दिक धन्यवाद ।

– श्री. अफ्रोस, पोल्लाच्ची, तमिलनाडु

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான் சேலம் அவர்களுக்கு அன்பான மாலை வணக்கம். பொள்ளாச்சி சரஸ்வதி தியாகராஜா கல்லூரியில் நடைபெற்ற ஆறாவது சபரி பரிவார் மிலனின் கலந்து கொள்ள எனக்கு வாய்ப்பு வழங்கியதில் மிக்க மகிழ்ச்சி. அதில் நடைபெற்ற அனைத்து நிகழ்வுகளும் மிகவும் சிறப்பாக இருந்தது... மேலும் வாணி விகாஸ் தேர்வு விபரங்கள் அதில் கலந்து கொள்ளும் விபரங்கள் மற்றும் அனைத்து விதமான புத்தக விபரங்கள் சபரியின்

மூலம் செயல்படுத்தப்படும் அனைத்து திட்டங்களையும் பற்றி தெளிவாக எடுத்துக் கூறியிருந்தார்கள். அது மிகவும் பயனுள்ளதாக இருந்தது. மேலும் மதிய உணவு சிறப்பாக ஏற்பாடு செய்திருந்தீர்கள். விழாவை சரியான நேரத்தில் தொடங்கி சரியான நேரத்தில் முடித்து சிறப்பாக நடத்தி இருந்தீர்கள். இதில் வழங்கப்பட்ட சான்றிதழும், சால்வையும் மிகவும் அருமையாக உள்ளது... இந்த விழாவின் மூலம் பல்வேறு நகரங்களில் இருந்து வந்த ஹிந்தி ஆசிரியர்களை சந்திப்பதற்கான ஒரு வாய்ப்பு கிடைத்தது.... நானும் சபரியின் ஒரு உறுப்பினராக இருப்பதில் மிகுந்த மகிழ்ச்சி அடைகிறேன். நன்றி.

- ஸ்ரீ. சின்னையா,
பி.குமாரபாளையம், தமிழ்நாடு

வாழ்த்துக்கள் பல... வளர்ச்சியுடன்.... உச்சத்தில் ...
சபரியுடன் ஹிந்தி மொழி ஆட்சி...
இப்படிப்பட்ட நிகழ்ச்சிகளே அதற்கு சாட்சி...
ஜெய் ஹோ சபரி...

- ஸ்ரீ. செந்தில்குமார், அரக்கோணம், தமிழ்நாடு

Namaste ji. Reached home safely. Thank you for conducting this auspicious event. It was very socializing and informative.

- Sri. Chitra, Coimbatore, TN

This is Dr. Usha, the principal of Sri Sankara Nursery and Middle School, Pulivalam, Thiruvarur. I want to express my gratitude for yesterday's function. It was truly a wonderful experience. Thank you very much for that. Kudos to the entire team who worked together.

- Sri. Usha, Chengalpattu, TN

Namasthe ji, I am very grateful and happy to be part of this parivar milan and useful for upcoming generation doing great keep going... Thank you ji.

- Sri. Revathi, Coimbatore, TN

Grateful to be part of the Shabari Parivar Milan in Pollachi yesterday. Thank you all for your warm hospitality and for making us feel so comfortable as at home. It was a lovely and memorable time !

- Sri. Shanthiya, Coimbatore, TN

Dear Sir/Madam, 6th Shabari Parivar Milan at Pollachi was well planned. This was my 1st participation and found this event as a new milestone in bringing all Hindi Teachers together and giving an optimal opportunity for the development of Hindi in our region. All the best wishes to Shabari Management for their endless contribution to the development of Hindi & Society.

- Sri. Ranga Raju, Muthur, TN

Namaste ji, I attended Shabari Siksha Sansthan Parivar Milan and it was my first meeting with Shabari. It was really a great experience and I learnt the importance of women in Hindi learning and teaching. I also learnt the 6 easy and basic steps to learn spoken Hindi basics. The hospitality was so overwhelming and the food was very tasty. All the arrangements were done excellently and executed flawlessly. I Thank everyone of the Shabari team... and i will be expecting these kinds of gatherings in the future. Thank you so much ji for this wonderful opportunity...

- Sri. Ramalakshmi, Palladam, TN

Dear Sir/Madam, 6th Shabari Parivar Milan at Pollachi was well planned. This was my 1st participation and I found this event to be a new milestone in bringing all Hindi Teachers together and giving an optimal opportunity for the development of Hindi in our region. All the best wishes to Shabari Management for their endless contribution to the development of Hindi & Society.

- Sri. Pandiammal, Dindigul, TN

नवांकुर

नारी शिक्षा और हिन्दी भाषा

– लक्षिता श्रीधर, बारहवीं कक्षा,
एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

आज मैं नारी शिक्षा हिन्दी भाषा के विषय पर अपना विचार प्रस्तुत करना चाहती हूँ। शिक्षा जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। जब एक लड़की शिक्षित होती है, तो पूरा परिवार प्रगति करता है। एक शिक्षित नारी न केवल अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देती है, बल्कि समाज को भी बेहतर बनाती है। नारी को पहली शिक्षिका कहा जाता है, क्योंकि माँ ही बच्चों को सबसे पहले भाषा सिखाती है। इसी कारण हिन्दी भाषा के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी महान हस्तियों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी को समृद्ध किया और देश भक्ति की भावना जगाई। आज भी महिलाएँ नई पीढ़ी को प्रेरित कर रही हैं और अपनी भाषा पर गर्व करना सिखा रही हैं। अंत में, मैं यही कहना चाहती हूँ कि यदि नारी शिक्षित होगी, तो परिवार आगे बढ़ेगा, और जब परिवार आगे बढ़ेगा, तभी देश मजबूत बनेगा।

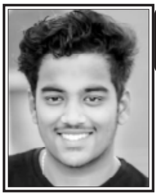

सिर्फ मैं

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

बस प्यार के लिए
कोई मुझे देखता नहीं
चुपचाप अकेला चलता हूँ
भीड में छोटा लगता हूँ
जैसे मेरी कोई कीमत नहीं
जैसे मेरी कोई कीमत नहीं।

अकेली रातें सुनसान दिन
अपने ही रास्तों में खोया
यहाँ कोई नहीं हाँ नहीं
मैं तो बिलकुल अकेला हूँ
दूर दूर तक ढूँढ लिया
सिर्फ मैं हूँ कोई यहाँ नहीं।

चाहे कोई साथ रहे न रहे
खुद अपना आँसू पोंछ लूँगा
सीखूँगा बढूँगा मजबूत बनूँगा
खुद को जानूँगा बेहतर बनूँगा
मेरे पास मैं हूँ सबल बनूँगा
अपनी ताकत खुद बन जाऊँगा।

தமிழமுது - நேர்பட ஒழுகு

- எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனிதனை மனிதனாக்குவதும், தெய்வமாக்குவதும், விலங்குகளை போல அல்லது அனைத்து உயிர்களிலும் மிகவும் கேவலமான உயிராக மாற்றுவதும் அவனுடைய எண்ணங்களும் செயல்களும் ஆகும். ஒவ்வொரு நாளும் மனிதன் தான் செய்கின்ற செயல்களின் பலனை தன்னுடைய வாழ்நாளில் அனுபவித்தே ஆக வேண்டும். எண்ணங்களின் தாக்கமும் செயல்களின் பலன்களும் ஒரு மனிதனின் வாழ்க்கையை நலம் பெறவும் வளம் பெறவும் செய்கின்றன. தீதும் நன்றும் பிறர் தர வாரா என்பது மனித வாழ்க்கையில் நூற்றுக்கு நூறு சரியே.

பிறருக்கு நாம் செய்கின்ற நன்மைகள் நம்மை வந்து சேருகின்றதோ இல்லையோ எள்ளளவும் நாம் செய்கின்ற தீமையானது மலை அளவு நமக்கு வந்தே தீரும். செயல்களே வாழ்வின் சுக துக்கங்களுக்கு அடிப்படையாக அமைகின்றன. நல்ல எண்ணம், நேர்கொண்ட பார்வை நல்ல நடவடிக்கைகள் மனிதனை நல்ல நிலைக்கு எடுத்துச் செல்கின்றன.

நேர்பட ஒழுகு என்பதன் பொருள் ஒழுக்கம் தவறாமல் நேர்மையான வழியில் நடக்க வேண்டும் என்பதாகும். ஔவையார் அருளிய ஆத்திசூடியில் இடம்பெற்றுள்ள இந்த வரிகள், உண்மை பேசுதல், நன்னடத்தை, பிறருக்கு உதவுதல் மற்றும் நேர்மையான வழியில் வாழ்வை அமைத்தல் போன்ற நற்பண்புகளை வலியுறுத்துகின்றன.

அமுதத் தமிழில் வாழ்வை வளம் பெறச் செய்ய ஔவையார் அருளிய இந்த வரிகளை உணர்ந்து நேர்பட ஒழுகி நல்ல மனிதராக வாழ்வது ஒவ்வொரு மனிதனையும் தன்னுடைய வாழ்வை பொன்னான வாழ்வாக மாற்ற வழிவகை செய்திடும். எனவே நேர்பட ஒழுகிடுவோம் நிம்மதியாக வாழ்வோம்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருச்சிறுகுடி

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''செற்றினின் மலிபுனல் சிறுகுடி மேவிய
பெற்றிகொள் பிறைமுடி யீரே
பெற்றிகொள் பிறைமுடி யீருமைப் பேணிநஞ்
சற்றலர் அறுவின யிலரே.''

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் அருளிய
மூன்றாம் திருமுறைப் பாடல்

சூக்ஷ்மபுரம், மங்கலபுரி, செருகுடி என்றெல்லாம் சிறப்பிக்கப்படும் திருச்சிறுகுடி திருமுறை திருத்தலமானது திருவாரூர் மாவட்டம், குடவாசல் அருகே உள்ளது. காவிரியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவார பாடல் பெற்ற தலங்களும் திருச்சிறுகுடி 60ஆவது திவ்ய திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

ஒருமுறை ஸ்ரீபரமேஷ்வருனும் - ஸ்ரீ பார்வதி தேவியாரும் திருக்கயிலாயத்தில் சொக்கட்டான் (தாயம்) விளையாடினர். அதுசமயம் ஈசன் திருவருளால் விளையாட்டில் அம்பிகை வென்றார். உடனே ஸ்ரீ சிவபெருமான் மாயமாக மறைந்தார்.

இதனால் கலக்கமுற்ற ஸ்ரீ பார்வதி தேவியார் இந்தத் தலம் வந்து திருக்குளம் அமைத்து சிறுபிடி மணலால் சிவலிங்கம் பிடித்து உள்ளம் உருக ப்ராத்தனை செய்தார்.

அம்பிகையின் அன்பினால் கட்டுண்ட ஈசன் உடனே தோன்றி, ஸ்ரீ பார்வதி ! கணவன் மனைவியிடையே யார் பெரியவர் என்ற தன்முனைப்பு இல்லாமல், ஒருவருக்கு ஒருவர்விட்டுக் கொடுத்து வாழ்ந்தால் குடும்பத்தில் ஒற்றுமை நீடிக்கும், என்றும் ஆனந்தம் நிலவும். இச் செய்தியை உலகுக்கு உணர்த்தவே நாம் உம்மை வெற்றிபெறச் செய்து, உமது மகிழ்ச்சியை எமது மகிழ்ச்சியாகக் கொண்டாடினோம் என்றார்.

ஒரு எடுத்துக்காட்டான தம்பதியர் எப்படி வாழ வேண்டும் என்பதற்கு விளக்கமாக இத்தலம் திகழ்கிறது. இதனால் கருத்து வேற்றுமை காரணமாகப் பிரிந்த தம்பதியர் இங்கு வந்து அம்பிகையையும், ஈசனையும் வணங்க அவர்கள் மனவேறுபாடுகள் அகன்று ஒருமித்த கருத்தோடு தித்திக்க வாழ்வர் என்பது அனுபவம்.

சிறுபிடி மணல் கொண்டு அம்பிகை சிவலிங்கம் செய்த வழிபட்ட தலம் என்பதால் இப்பகுதி ‘சிறுபிடி’ என்றே வழிபடப்பட்டு காலப்போக்கில் ‘சிறுகுடி’ என மருவியுள்ளது.

மேலும் திருக்கயிலையில் மறைந்து சூக்ஷமமான ஸ்ரீ சிவபெருமான் இத்தலத்தில் தோன்றி அம்பிகைக்கு ஆனந்தம் அருளியதால் இத்தலம் சூக்ஷமபுரம் எனவும் இறைவன் சூக்ஷமபுரீஷ்வரர் என்றும் சிறப்பிக்கப்படுகின்றார்.

சிறப்புக்கள் :

1. தல விநாயகர் ஸ்ரீ மங்கல விநாயகர் ஆவார்.
2. சங்கப் பாடல்களால் போற்றப்படும் வள்ளல் ‘‘பண்ணன்’’ வாழ்ந்த ஊர் இது ஆகும்.
3. செவ்வாய் தோஷம் உடையவர்கள் செவ்வாய்க்கிழமைகளில் இத்தலம் வந்து காலை மாலை மங்கல தீர்த்தத்தில் நீராடி மஹாதேவனை வழிபட அங்காரக தோஷம் அகலும், திருமணத் தடை முதலான இடையூறுகள் விலகும்.
4. இஸ்லாமியர்கள் கூட இங்கு வந்து குளத்தில் நீராடி திருக்கோயிலில் விபூதி ப்ரஸாதம் பெற்றுச் செல்வது சிறப்பு.
5. மூலவர் ஸ்வயம்பு திருமேனி, நெற்றியில் சிறு பள்ளம், இருபுறங்களிலும் கை பிடித்த சிறிய அடையாளங்களுடன் காட்சியளிக்கிறார்.
6. அம்பாளுக்கு மட்டுமே அபிஷேகம், சிவலிங்கத்திற்கு சாம்பிராணி தைலம் சாற்றப்படுகிறது.
7. ‘‘தேன் மலர் பொழிலணி சிறுகுடி’’ என்ற சம்பந்தர் வாக்கிற்கிணங்க இன்றும் இறைவன் சந்நிதி முன் மண்டபத்தில் தேன்கூட்டினைக் காணலாம்.

8. இத் திருக்கோயிலில் உள்ள ''சந்தோஷ ஆலங்கன மூர்த்தி'' திருமேனி பேரழகு.
9. செவ்வாய் கிரஹம் வழிபட்டு சாப விமோசனம் பெற்ற தலம் என்பதால் தலம் மங்கலபுரி என்றும் அழைக்கப்படுவதோடு, ஈசன் மங்கலேஷ்வரர் எனவும் அழைக்கப்படுகின்றார்.
10. ஈசன் அருளால் நவக்ரஹ தோஷங்கள் விலக ''கோளறு பதிகம்'' பாடிய ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் இத் திருக்கோயிலில் நவக்ரஹங்களுடன் திருக்காட்சி தருகின்றார்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ சூக்ஷ்மபுரீஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ மங்கலநாதர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ மங்கலாம்பிகை
தீர்த்தம்	:	மங்கல தீர்த்தம்
தலமரம்	:	வில்வம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	கருடன், சூரியன், செவ்வாய், கந்தர்வர்கள், விஷ்வாமித்ர மஹரிஷி முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் இத்தலத்து ஈசனின் திருப்புகழைப் பாடிய பதிகம் மூன்றாம் திருமுறையில் உள்ளது.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி - பகல் 11.00 மணி வரை
மாலை 05.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சூக்ஷ்மபுரீவஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருச்சிறுகுடி (செருகுடி),
சரபோஜிராஜபுரம் (Po),
குடவாசல் (Tk),
திருவாரூர் (Dt) - 609 503.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

04366-291646/9381044986

அமைவிடம் :

திருச்சிறுகுடி திருமுறை திருத்தலமானது திருவாரூர்

மாவட்டத்தில் உள்ளது. மாயவரம்- திருவாரூர் மார்க்கத்தில் பேரளம் அருகே உள்ள பூந்தோட்டம் அரசலாறு பாலத்தைக் கடந்து கும்பகோணம் நாச்சியார் கோயில் சாலை வழியாக வந்து கடகம்பாடி அருகே இத்திருக்கோயிலை அடையலாம்.

ஸ்ரீ மங்கலாம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ சூக்ஷ்மபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1. Place of Publication	:	Salem - 636 001
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	D. Sivakumar
Nationality	:	Indian
Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4. Publisher's Name	:	M. Sridhar
Nationality	:	Indian
Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5. Editor's Name	:	M. Venkateswaran
Nationality	:	Indian
Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6. Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.04.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

परिवार मिलन

परिवार मिलन

Siksha

Posted at Salem HPO 636 001. April-2026

Published on 5th April-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

____

____

____

____

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED